Vol 6 Issue 11 Dec 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

समाज पर साहित्य का प्रभाव

डॉ. सीता राम मिश्रा
हिन्दी विभाग, एस.एम.एस.जी. कॉलेज, शेरघाटी.

प्रस्तावनाः

मानव की संकल्पात्मक अनुभुतियों के संचित भण्डार का नाम साहित्य है। साहित्य में भावों एवं विचारों की श्रेयमती पतितपावनी गंगा हृदय–हिमगिरि से निकल अनन्त काल से तीव्र चित्रपटी है और भावना की मनोहारिणी पुष्करिणी है। साहित्य की वाटिका में भावों के विविध प्रसून नित्यप्रति खिला करते हैं, मनोरागों के विहंग मधुर–मधुर कलरव किया करते हैं, कल्पना की रंगबिरंगी तितलियाँ यत्र–तत्र उड़ करती हैं, बौद्धिक विचारों के भ्रमर मँडराया करते हैं और संवेदना की सुगान्धि लेकर वाणी की मलियानिल बहा करती है। साहित्य–वाटिका में बिहार करने वाले सहृदयों का मन इसी कारण आह्लादकारी बना रहता है, क्योंकि यहाँ सात्विकता का साम्राज्य रहता है, भावुकता का सर्व आधिपत्य रहता है, सहृदर्यप्रियता अद्भुत आकर्षण उत्पन्न किया करती है। साहित्य अखण्ड आनन्द का अजस्र स्रोत है, व्यावहारिक ज्ञान का अक्षर भण्डार है, लोक शिक्षा का अविरल प्रवाह है, लोक–हित का अनन्त सिन्धु है और 'सद्यः परनिवृत्ति' का शारवत मन्दिर है। साहित्य की शीतल स्रोतस्विनी में अवगाहन करने से रजस् और तमस् से विमुक्ति मिलती है, मन का मैल कटता है, चित्त की चंचलता दूर होती है, बुद्धि का विक्षेप शान्त होता है, हृदय की अशन्ति दूर होती है और अखण्ड आनन्द की प्राप्ति होती है। इसीलिए सुधी जन अन्य सभी बातें छोड़कर साहित्योपवन में विचरण करना अधिक श्रेयस्कर समझा करते हैं।

प्रायः 'सहित्स्य भावः साहित्यम्' के अनुसार सहित के भाव को साहित्य कहा जाता है। यहाँ 'सहित' शब्द विचारणीय है। 'सहित' का एक तो अर्थ होता है अर्थात् साहित्य में सम्पूर्ण विद्या, समस्त कला, सम्पूर्ण ज्ञान एवं सम्पूर्ण शास्त्रों का समावेश होता है, क्योंकि साहित्य सभी को अपने साथ लेकर चलता है। इसके अतिरिक्त 'स–हित' का अर्थ है हित सहित अर्थात् साहित्य हित को लेकर चलता है, साहित्य में हित या कल्याण करने की सामर्थ्य होती है और वह मानव को प्रेय की अपेक्षा श्रेय की ओर अग्रसर करने में अधिक सहायक होता है। साहित्य की उक्त दोनों व्युत्पत्तिपरक व्याख्याओं से यह स्पष्ट है कि जो सम्पूर्ण शास्त्रों का अपनी खाद्य सामग्री के रूप में उपयोग करता है, जो समस्त विद्याओं को अपना वर्ण्य विषय बनाता है, जो समस्त कलाओं को अपनी सहकारी समझकर गले लगाता है, जो सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान को अपना प्रतिपाद्य समझता है, जो समस्त जीवन एवं जगत् को अपनी क्रीड़ी–स्थली समझता है और जो अखिल ब्रह्माण्ड को अपनी अनुभूति का मूलाधार समझता है उसे साहित्य कहते हैं। इतना ही नहीं 'हितेन सहितम्' के आधार पर साहित्य वह है, जो लोकमंगलकारी हो, जो श्रेयस्कर हो, जो अमंगलों का विनाश करके मंगल प्रदान करने वाला हो, जो चिर–दग्ध–दुःखी वसुधा को शन्ति एवं सुख प्राप्त कराने में सहायक हो और जो अखण्ड आनन्द का विधायक हो। साहित्य की ये व्याख्यायें जहाँ एक ओर साहित्य के महत्त्व का प्रतिपादन करती हैं, वहाँ दूसरी ओर साहित्य ने शब्द और अर्थ के माध्यम से ही उपलब्धियों की ओर भी स्पष्ट संकेत करती हैं। साहित्य ने शब्द और अर्थ के माध्यम से ही उक्त सम्पूर्ण वैशिष्ट्य को प्राप्त किया है और साहित्य में पार्वती–परमेश्वर की तरह अथवा जल और लहर की तरह शब्द और अर्थ सदैव अभिन्न एवं अविभाज्य रहते हैं। इसी कारण शब्द और अर्थ के अभेद सम्बन्ध को साहित्य कहा सकते हैं। परन्तु साहित्य एक भाव–समष्टि का नाम है, क्योंकि जैसे जीवन कहने से समस्त प्राणियों के समष्टिगत जीवन का बोध होता है, वैसे ही साहित्य कहने एक भाव–समष्टि या विचार–समष्टि का ही बोध होता है। वन–प्रदेश की भाँति साहित्य को जानने के लिए भी हमें उसके विविध रूपों से अवगत होना पड़ेगा। जैसे वन या जीवन कोई मूर्त्त पदार्थ नहीं है, वैसे ही साहित्य भी भूर्त्त न होकर सर्वथा अमूर्त्त एवं अरूप होता है। इसकी विविध विधाओं की समष्टि साहित्य कहलाती है और इसकी वे विविध विधायें हैं–नाटक, कविता, उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबन्ध जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि। साहित्य का अभीष्ट ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसकी उक्त विधाओं से परिचित होना परमावश्यक होता है और इन व्यष्टिगत विधाओं से यथाशक्ति परिचित होनक इनमें तन्मय होने पर ही साहित्य के अभीष्ट फल–अखण्ड आनन्द को प्राप्त किया जा सकता है। जिस प्रकार विविध विधाओं की समष्टि का नाम साहित्य है, उसी प्रकार विविध व्यष्टिगत सत्ता का बोध होता है। इस दृष्टि से जब 'समाज' पर विचार किया जाता है, तब ज्ञात होता है कि समाज प्राणियों के उस समूह को कहते हैं, जिसमें वे एकत्र होकर रहते है, खाते–पीते हैं, जीवन–यान की सुख–सुविधाओं की उपलब्धि का प्रयास करते हैं तथा राग–द्वेष में लीन होकर अपनी–अपनी वैयक्तिक एवं सामूहिक सत्ता को बनाये रखने के लिए संघर्ष करते रहते हैं। अतः संघर्ष–रत जीवन–समष्टि का ही नाम समाज है। समाज में यद्यपि व्यष्टिगत प्रयत्नों एवं प्रयासों को ही महत्त्व दिया जाता है, तथापि जब वे व्यष्टिगत प्रयत्न सामूहिक दृष्टि से जोर पकड़ लेते हैं तथा उनमें वैयक्तिक चेतना सामूहिक चेतना में परिणम हो जाती है, तब उन प्रयत्नों एवं प्रयासों को सामाजिक प्रयत्न या सामाजिक प्रगति का

Volume - 6 | Issue - 11 | December - 2016

नाम दे दिया जाता है। इसका कारण यह है कि जैसे एक–बूँद के सम्मिश्रण से सागर का निर्माण होता है, वैसे ही एक–एक व्यक्ति या एक–एक प्राणी से समाज निर्मित होता है और जिस तरह सागर बूँद–समष्टि का नाम है, उसी तरह व्यक्ति–समष्टि का नाम है, उसी तरह क्यक्ति–समष्टि को समाज कहते हैं। इसीलिए समाज कहने से व्यक्तियों के एक समूह का बोध होता है, प्राणियों के एक समूह की प्रतीति होती है। और जीवधारियों के एकत्र रहन–सहन, आचार–विचार, क्रिया–प्रतिक्रिया, उपलब्धि–अनुपलब्धि, ज्ञान–अज्ञान आदि की जानकारी होती हैं। परन्तु आजकल समाज का इतना व्यापक अर्थ नहीं लिया जाता। अब तो 'समाज' से अभिप्राय केवल व्यक्तियों के समूह से ही है अर्थात् जहाँ अधिकांश व्यक्ति एकत्र जीवन–यापन करते हैं, विविध प्रकार के जीवनोपयोगी कार्यों में संलग्न रहते हैं, विविध प्रकार की उत्रति के लिए सामूहिक एवं वैयक्तिक रूप से प्रयत्न करते हैं तथा विविध प्रकार की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आर्थिक प्रगति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं उसी को 'समाज' कहते हैं। पहले विश्व विविध भागों में विभाजित था और प्रत्येक भाग पृथक् एवं असम्बद्ध था। परन्तु विज्ञान ने आज न केवल समय की दूरी कम की है, अपितु स्थान की दूरी भी पूर्णतया कम कर दी है और विश्व के सभी भागों को परम्पर सम्बद्ध कर दिया है। इसलिए आज किसी एक भू–भाग के समाज की चर्चा नहीं की जाती, अपितु विश्व भर के मानवों का एक समाज माना जाता है और 'समाज' कहने ने सम्पूर्ण मानव–समाज कबोध होता हैं। इस प्रकार समाज के अभिप्राय मानवों के उस समूह से है, जो इस भू–मण्डर पर निवास करता है, जो पारस्परिक राग–द्वेष से आबद्ध होकर भी अपनी वैयक्तिक एवं सामूहिक प्रगति के लिए प्रयास करता है, जो विविध प्रकार के ज्ञान–विज्ञान से समृद्ध होकर अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में संलग्न रहा है, जो अधिकाधिक शक्तियों का संचय करके अपने अस्तित्व की रक्षा में तल्लीन रहता है तथा जो विविध साधन–सामग्री जुटाकर प्रकृति से संघर्ष करता हुआ अपनी सत्ता को सर्वोपरि सिद्ध करने में दत्तचित रहा आता है।

प्रश्न यह उठता है कि साहित्य के निर्माण में समाज का क्या योगदान रहता है? उत्तर स्पष्ट है कि साहित्य जिन वैयक्तिक सुख–दुःख आशा–निराशा, हास–परिहास, शोक–उल्लास, घृणा–प्रेम, राग–द्वेष अनुराग–विराग आदि का निरूपण करता है, उनका उद्‌गमस्थल तो समाज ही है। सामाजिक जीवन की विविध स्थितियों एवं परिस्थितियों को चित्रित करना ही साहित्य का एकमात्र कार्य है। साहित्य को मंमलमय एवं श्रेयस्कर बनाने में समाज का ही योगदान रहता है, क्योंकि साहित्य समाज से उन मंगलकारी तत्त्वों को ग्रहण करके जनता के सम्मुख प्रस्तुत किया करता है, जो समाज को सत्य–मार्ग पर अग्रसर करने में सहायक होते हैं, समाज से वह उन व्यावहारिक बातों को लेकर जनता के सामने प्रदर्शित किया करता है, जिनके अध्ययन एवं अनुशीलन से समाज सुख–समृद्धि की ओर कदम बढ़ा सकता है। समाज साहित्य की प्ररम्भिक सामग्री है और साहित्य समाज की सामग्री से निर्मित एक कलात्मक कृति है, समाज साहित्य का बीज है और साहित्य समाज रूपी बीज से विकसित वट–वृक्ष है, समाज विधि प्रकार के जलकणों का बिखरा हुआ स्वरूप है और साहित्य उन जलकणों से निर्मित विशाल सागर है। यही कारण है कि साहित्य के निर्माण में समाज का सर्वाधिक योग रहता है।

जिस प्रकार साहित्य के निर्माण में समाज का सर्वाधिक हाथ रहता है, उसी प्रकार समाज के निर्माण में साहित्य का भी योगदान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है। समाज को एक सही दिशा प्रदान करने में अथवा समाज का पथ–प्रदर्शन करने में साहित्य का बड़ा रहता है, क्योंकि साहित्य ही समाज के भ्रमित मानवों को जीवन के महत्व की शिक्षा देता है, साहित्य ही उन्हें जीवन–यापन के विविध ढंग सिखाता है, साहित्य ही उन्हें व्यावहारिक ज्ञान का उपदेश देता है, साहित्य ही उन्हें विविध प्रकार की मनोवृत्तियों से परिचय कराता है, साहित्य ही उन्हें विविध भावों की जानकारी प्रदान करता है, साहित्य ही उन्हें जीवन–मूल्यों से अवगत कराता है, साहित्य ही उन्हें परम्परागत विचारों का परिचत देता है, साहित्य ही उन्हें अतीत जीवन की सफलता एवं विफलता से अवगत कराकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है, साहित्य ही उन्हें वर्त्तमान जीवन की उन्नति एवं अवनति का प्ररिचय देकर उनकी प्रगति का मार्ग खोल देता है और साहित्य ही उन्हें निर्दिष्ट उद्देश्य–पूर्ति के योग्य बनाने के लिए उनके पथ की बाधाओं, रूकावटों एवं विघ्नों का स्पष्ट रूप प्रस्तुत किया करता है। साहित्य का एकमात्र लक्ष्य जीवन की व्याख्या करता है। साहित्य समाज की प्रज्ञा है, वह समाज को सत्–असत् पदार्थों से अवगत कराता हुआ उसे विवेक–वुद्धि प्रदान करता है, जिससे समाज प्रेय–पथा का अनुगामी न होकर सदैव श्रेय–पथ की ओर अग्रसर होने में अपनी रूचि प्रदर्शित करता रहे और 'अघटित घटना पटीयसी' माया के प्रपंचों से मुक्त होकर परमधाम को प्राप्त करने में सर्वथा समर्थ हो। इस प्रकार समाज के सवीडीण विकास में साहित्य का योगदान अत्यन्त महत्त्व रखता है।

इस प्रकार साहित्य और समाज का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध स्थापित हो जाती है। इसी कारण यदि समाज वृक्ष है तो साहित्य उसका फल है; यदि समाज शरीर है तो साहित्य उसका नेत्र है, यदि समाज बादल है तो साहित्य जल है, यदि समाज उत्तर हिमालय है तो साहित्य उससे निःसृत सुरसरि है, यदि समाज पुष्पोद्यान है तो साहित्य उसकी सुरभि है, यदि समाज बसंत है तो साहित्य वासन्तिक छटा है और यदि समाज बिम्ब है तो साहित्य उसका प्रतिबिम्ब है। साहित्य और समाज का यह अभेद सम्बन्ध आदि–काल से ही चला आ रहा है और इसी सम्बन्ध के कारण साहित्य से किसी समाज की वस्तु स्थिति का बोध होता है और समाज से किसी साहित्य परस्पर सम्बद्ध होकर कार्य करते हैं। समाज और साहित्य दोनों के पारस्परिक सहयोग द्वारा दोनों की समृद्धि एवं समुन्नति हुआ करती है।

साहित्य एक ऐसा कोषागार है, जिसमें प्राचीन से प्राचीन समाज का स्वरूप मिल जाता है, क्योंकि समाज तो परिवर्तित होते हैं और उनके रूप भी युगानुसार बनते और बिगड़ते रहते हैं, किन्तु साहित्य में वे सभी रूप सर्वदा सुरक्षित रहते हैं। साहित्य समाज की थाती को बड़ी सावधानी से सँजोये रहता है और उसे चित्रित करके समाज को अमर एवं शाश्वत बना देता है। समाज को चित्रित करके समाज को अमर एवं शाश्वत बना देता है।

संदर्भ सूची :

1.आजकल– अगस्त– 2011
2.आजकल– नवम्बर– 2013
3.कुरूक्षेत्र– अगस्त– 2014

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org